भारत में मीडिया के बुरे दिन...शुरू होते हैं अब

पेज तीन का शेष

द इकोनॉमिक टाइम्स के संपादक राहुल जोशी जो अंबानी के पक्ष में खबरें लिख-लिखकर अंबानी के काफी नजदीक चले गए थे, अंबानी ने उन्हीं राहुल जोशी को टीवी 18 ग्रुप का सीईओ बना दिया। इसके बाद टाइम्स ग्रुप के कई पत्रकार ज्यादा पैसे की लालच में अंबानी समूह के टीवी 18 ग्रुप में चले गए। टाइम्स ग्रुप सिवाय तिलमिलाने के और कुछ नहीं कर सका। क्योंकि उसे मालूम है कि टीवी 18 के पीछे सिर्फ अंबानी ही नहीं बल्कि मोदी और पूरी भाजपा है।

इन घटनाओं को दोहराने की जरूरत इसलिए पड़ी कि भारत के लोकतंत्र के साथ जिस तरह मोदी, आरएसएस, अंबानी, अदानी मिलकर बलात्कार कर रहे हैं, उसके खिलाफ अगर जनता उठकर खड़ी नहीं होगी, तो आप लोगों को मामूली सही सूचनाएं भी नहीं मिल पाएंगी। क्योंकि ऊपर जितने भी मीडिया ग्रुप का जिक्र किया गया है, वह पूंजीपतियों के हाथों में नियंत्रित हैं। पूंजीपतियों का मीडिया तमाम सूचनाओं को बहुत मुश्किल से आप तक पहुंचने देता है।

अब इन लोगों की नजर सोशल मीडिया पर है। सोशल मीडिया का मतलब है इंटरनेट पर फेसबुक, ट्विवटर, इंस्टाग्राम और अनगिनत ऑनलाइन वेबसाइट। इंटरनेट चूंकि विदेशियों के हाथों में है, उस पर मोदी सरकार का ज्यादा सिक्का नहीं चलता लेकिन कानून और बिजनेस का भय दिखाकर इनको नियंत्रित किया जा रहा है। इंटरनेट पर ऐसी हजारों समाचार वेबसाइट संघियों और भाजपाइयों ने उतार दी हैं, जिन पर झूठी खबरें, फर्जी विडियो डाले जा रहे हैं। जैसे दंगा भड़काने के लिए सैकड़ों की संख्या में भाजपाई वेबसाइट्स हैं। विपक्ष के नेताओं के बारे में फर्जी सूचनाएं, कृत्रिम ढंग से अश्लील फोटो बनाकर उनके बारे में गुमराह करने के लिए अलग साइट्स हैं।

आप यकीन करेंगे कि शहीदे आजम भगत सिंह को संघ संस्थापक हेगडेवार से प्रभावित बताने वाली साइटें भी हैं। पिछले दिनों महात्मा गांधी और जवाहर लाल नेहरू के बारे में कृत्रिम ढंग से अश्लील फोटो बनाकर भ्रम फैलाया गया। मुसलमानों के पैगंबर और उनके अन्य महापुरुषों के बारे में गलत-गलत बातें और दुष्प्रचार के लिए अलग से साइट्स हैं। इसी तरह ईसाईयों और सिखों के धर्म गुरुओं के बारे में भी गलतफहमी फैलाने के लिए साइट्स बनाई गई हैं। आरएसएस का मीडिया सेल में करीब 500 लोगों को इस काम का जिम्मा मिला हुआ है। इसके अलावा सैकड़ों शुभचिंतक या विचारधारा से जुड़े लोग भी इस काम में सहयोग करते हैं।

तो डर किनसे है

इतना सारा ताना-बाना बुनने के बाद आरएसएस, मोदी, अंबानी-अडानी की राह में छोटे-छोटे अखबार, पत्रिकाएं, वेब चैनल्स, यूट्यूब पर स्वतंत्र चैनल, फेसबुक पर लाइव कवरेज, विभिन्न विचारधारा के लोगों के ट्विवटर हैंडल रोड़ा बने हुए हैं। मसलन मजदूर मोर्चा या गौरी लंकेश की पत्रिका लंकेश या फिर द वायर पर विनोद दुआ की तीखी टिप्पणियां इनकी नींद हराम कर देती हैं। फेसबुक पर रिटायर्ड आईपीएस विकास नारायण राय और हिमांशु कुमार की टिप्पणियां और विभिन्न आनलाइन प्लेटफॉर्म व अखबारों में उनके लेख संघियों व भाजपाइयों को परेशान कर देती हैं।

...लेकिन कब तक

पर सवाल वही है कि मजदूर मोर्चा या विकास नारायण राय या रवीश कुमार या विनोद दुआ कब तक जनता की आवाज बने खड़े रह सकते हैं। संघ और भाजपा के पास सबका इलाज है। इसलिए अंत में जनता ही यह फैसला करे कि वह प्रेस की आजादी को इस देश में बनाए रखना चाहती है या नहीं। अगर वह इन लोगों या इन माध्यमों के साथ खड़ी नहीं हुई तो मोदी और संघ इस लड़ाई को जीत ले जाएंगे।...जनता को सिर्फ इतना भर करना है कि वह मोदी और संघ को चुनौती देने वालों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी रहे। वह इनका साथ दे। चाहे इनसे जुड़ कर चाहे इनकी किसी भी रूप में मदद करके इस लड़ाई को धार दे सकती है।

राजनीति की जुमला बहनें

सम्पादक के नाम

मानवाधिकारों से वंचित हैं कैदी

शायद पहली बार किसी अखबार ने जेल प्रशासन द्वारा कैदियों पर किये जा रहे अत्याचारों को छापने का साहस किया है। जेल एक ऐसी जगह है जहां होने वाले घोटालों, अत्याचारों व गैर कानूनी धंधों की हवा भी बाहर नहीं जा सकती है। यदि किसी तरह चली भी जाय तो प्रशासन उसे झूठ कहकर तुरंत खारिज कर देता है। यहां कैदियों की समस्या यह है कि वे जेलर के विरुद्ध कुछ भी साबित कर पाने की स्थिति में नहीं होते; और तो और जेलर के भय से खुद पीड़ित कैदी भी जेलर के विरुद्ध गवाही देने से मुकर जाते हैं तथा कई बार तो खुद शिकायतकर्ता ही अपनी की हुई शिकायत से मुकर जाता है।

बाहर से किसी प्रकार की, विजिलेंस या फ़्लाईंग स्कवायड की टीम जेल के भीतर घुस कर छापा मार नहीं सकती क्योंकि जेल में प्रवेश के लिये ताला खुलवाने की इजाजत तो जेलर से ही लेनी पड़ती है। सबूत एकत्र करने के लिये कैदी, चोरी-छिपे जासूसी कैमरा ले जाने का प्रयास करते हैं। सफ़ल हो गये तो बढिया फ़ोटोग्राफ़ी करके तमाम जेल प्रशासन को टंगवा सकते हैं जैसे मार्च 2017 में होली के अवसर पर नाचते जेल कर्मियों को टंगवा दिया था। पकड़े जाने पर भयंकर प्रताड़ना का शिकार होना पड़ता है जैसे जून 2017 में नीमका जेल में हुआ; जहां एक पैन कैमरा पकड़ा गया था।

सैशन जज साहब एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी खाने का जो सेम्पल चेक करते हैं वह केवल सैम्पल ही होता है, कैदियों को मिलने वाला खाना नहीं होता। यदि खाने की जांच ही करनी है तो उस वक्त (सुबह 7 बजे व शाम 6 बजे) बैरकों में पहुंचे जब पानी की बाल्टी में दाल के कुछ दाने व शाम को उसी पानी की बाल्टी में तैरती कुछ शब्ज़ी बंट रही हो। यह भी जांच का विषय है कि दिन भर में कैदियों को जो खाने के लिये दिया जाता है उसकी लागत क्या है? सरकारी खजाने से करीब 180 रुपये प्रति कैदी प्रति दिन आता है जबकि कैदी को 50 रुपये से अधिक का नहीं मिलता।

नीमका जेल में रह चुका एक कैदी,

रामबीर पुत्र हरि सिंह
गांव सिलोटी (पलवल)

कैदियों को जिंदा रहने का हक भी नहीं देना चाहते

तीन साल जेल में रह चुकने के बाद मैंने महसूस किया कि जेल गये व्यक्ति को ऐसा समझ लिया जाता है मानो वह इंसान नहीं, उसे जिंदा रहने का भी हक नहीं। इसी सोच के चलते समाज एवं सरकार उसकी किसी भी शिकायत को गम्भीरता से नहीं लेती। जेलर, चाहे खुद कितना बड़ा चोर हो, अपराधी हो, उसकी सारी बात सच मानी जाती है और कैदी चाहे कितना ही सही बात कह रहा हो गलत मानी जाती है, क्योंकि वह कैदी है।

मानवाधिकारों का दिखावा करने के नाम पर तमाम सरकारें व न्यायपालिका कुछ ड्रामेबाज़ियां तो जरूर करती हैं परन्तु वास्तव में कैदियों को राहत दिलाने के लिये कुछ भी ठोस कार्यवाही नहीं होती। जेल का अस्पताल बिल्कुल नकली व नाकारा है इसके बावजूद बड़ी मुश्किल से सरकारी बीके अस्पताल रैफ़र किया जाता है। रैफ़र होने के बाद यदि पुलिस गार्द नहीं मिली तो प्रोग्राम कैंसिल। पलवल की अदालतों से आये कैदियों की तो, इस मामले में हालत और भी खराब है क्योंकि उनको बीके अस्पताल ले जाने के लिये पलवल से स्पेशल पुलिस बस आती है, जो अक्सर नहीं आ पाती और लाचार कैदी बीमारी झेलते रहते हैं।

समस्या इतनी भर नहीं, बीके अस्पताल में ही कौन सा इलाज हो जाता है। पुलिस गार्ड वाले भी अपनी ड्यूटी बजाते हुए वहां घुमा लाते हैं। अक्सर डॉक्टर नहीं मिलते। मिलते हैं जो वे विशेषज्ञ नहीं होते। कैदी मजबूर होता है, चाहते हुए भी कहीं ओर दिखा नहीं सकता। रो-पीट कर रह लेता है। जिंदा रहा तो बढ चुके मर्ज का छूटने पर बाहर आकर इलाज करा लेना है वरना जेल में ही भगवान को प्यारा हो जाता है।

छिद्दा पुत्र कमरू
गांव कराका (पलवल)

हाई स्कूल वाली बेटी से इतिहास पर बातचीत

-हिमांशु कुमार

अच्छा बताओ तुम्हें इतिहास में मुख्यतः क्या पढ़ाया जाता है ?
राजाओं की वीरता के किस्से.
इतिहास में राजों के वीरता के किस्से ही क्यों पढाये जाते हैं ?
हमारे इतिहास में उस समय के किसानों के बारे में या कारीगरों , मजदूरों या औरतों की हालत के बारे में क्यों नहीं पढ़ाया जाता ?
अगर तुम वेदों के समय से इतिहास को देखना शुरू करोगी,
तो तुम देखोगी कि वेदों में भी राजाओं की स्तुतियाँ हैं , यज्ञों का वर्णन है , बारिश, आग, हवा को देवता और राजा मान कर उनकी तारीफें हैं
पूरा इतिहास बोध हमारे राजाओं की वीरता और मर्दानगी के वर्णन में डूबा हुआ है
या फिर यज्ञ की विधियों का वर्णन है
लेकिन वेद यह नहीं बताते कि उस समय मनुष्यों को कैसे दास बनाया जाता था ?
वेद यह भी नहीं बताते कि उस समय धनी लोग कितनी पत्नियां रखते थे ?
वेद किसानों और दस्तकारों की आर्थिक हालत के बारे में भी नहीं बताते ?
उसके बाद का इतिहास भी राजाओं की वीरता की कहानियों का ही वर्णन करते हैं .
आम जनता की हालत के बारे में इतिहास मौन रहता है .
सारे धर्मों के धर्म ग्रन्थों को भी इतिहास की पुस्तक के रूप में देखो
सभीधर्मों के धर्मग्रंथ पुरोहितों और राजाओं के वर्णनों से भरे हुए हैं
ऐसा क्यों हुआ ? इसके बारे में हमें ज़रूर जानना चाहिए .
असल में पूरे मानव जाति की सभ्यता का विकास अन्याय पूर्ण व्यवस्था के विकास का इतिहास है
ध्यान से देखो जैसे जैसे सभ्यता का विकास हुआ
वैसे वैसे मेहनत करने वाले दुखी बनते चले गए
जैसे जैसे सभ्यता का विकास हुआ आराम से बैठने वाले मज़े की हालत में हो गए
सभ्यता के विकास के साथ ज़मीनों पर मनुष्य की मल्कियत हो गयी
इसके बाद मेहनत करने वाले लोग तो मजदूर बन गए और ज़मीन का मालिक बिना मेहनत किये ही मज़े में जीने लगा
मेहनत करने वाले लोग गुलाम बनाए गए
और गुलाम बनाने वाले मजे करने वाले बन गए
औरतों को मनुष्य के बराबरी के स्थान से नीचे गिरा कर पुरुष की संपत्ति के वारिस पैदा करने वाली मशीन और
औरतों को खेती में काम करने वाली दासी बना दिया गया
इसी के साथ साथ जो इतिहास लिखा गया
वह पुरुषों की वीरता, पुरुषों के एश्वर्य, और पुरुषों की लड़ाइयों के बारे में वर्णन करने वाला इतिहास था
सारा धर्म भी इसी तरह के वर्णनों से भरा हुआ है
इसी लिए सारे धर्म गरीब विरोधी. मेहनतकश विरोधी और औरतों के विरोधी हैं
करीब पचास साल पहले तक आम लोग इतिहास के अध्ययन से बाहर थे
उसके बाद यूरोप में फ्रांस की क्रांति और भारत में रोमिला थापर , इरफ़ान हबीब , बिपिनचन्द्रा जैसे साहित्यकारों का युग शुरू हुआ
इन इतिहासकारों नें इतिहास को एक नए नज़रिए से देखने की शुरुआत करी
इन्होनें इतिहास के अलग अलग समय में किसानी का इतिहास, औरतों की हालत का इतिहास, दस्तकारी का इतिहास, अन्याय का इतिहास के बारे में शोध करने और लिखने की शुरुआत करी,
अगर तुम आज की राजनीति की भी हालत देखोगी तो तुम्हें इतिहास की गलत दिशा की झलक समझ में आ सकती है
जैसे आज राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और भाजपा किस बारे में बात करते हैं ?
राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और भाजपा बात करते हैं हमारी सेना की वीरता की
राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और भाजपा कभी भी समाज में फैले अन्याय की बात नहीं करेंगे
राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और भाजपा कभी भी दलितों के साथ होने वाले अन्याय की चर्चा नहीं करेंगे
राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और भाजपा कभी भी आदिवासियों के साथ होने वाले अन्याय की चर्चा नहीं करेंगे
राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और भाजपा आपके सामने एक नकली दुश्मन खड़ा करेगी
जैसे कहीं वह मुसलमानों को ,कहीं आदिवासियों को , कहीं ईसाईयों को दुश्मन के रूप में खड़ा करेगी
और फिर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और भाजपा सेना और पुलिस को आपके एकमात्र रक्षक के रूप में पेश करेगी
ऐसा करके फिर से वही पुराना इतिहास वाला खेल खेला जाता है
असली अन्याय से ध्यान हटा कर नकली वीरता, पौरुष, और गर्व को आपके जीवन का मुद्दा बना दिया जाना
आप को बहुत चालाकी से राम और कृष्ण की वीरता की पूजा करने में बैठा दिया गया है
और आप अपने आस पास होने वाले अन्याय से ध्यान हटा कर एक नकली गर्व में भरा हुआ जीवन काट कर मर जाते हैं
इसलिए इतिहास को नई समझ के साथ देखने की जरूरत है .
इतिहास को समझने से आपको अपने वर्तमान की ठीक से समझ आ जाती है।